ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

अपने-अपने अजनबी में मृत्यु बोध का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

नीतू गोस्वामी

शोधार्थी

निर्मला ढैला बोरा, Ph. D.

निर्देशिका, डी. एस. बी. कॅम्पस नैनीताल.

अज्ञेय ने अजनबीपन तथा अस्तित्ववादी चितंन की अवधारणा को मृत्यु बोध के स्वरूप में 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास का सर्जन किया है। यह जहॉ अजनबीपन की विवेचना करता है वहीं यह उपन्यास मानव के अन्तर्मन के द्वन्द्व को रेखांकित करता है। अज्ञेय ने मृत्यु बोध की अवधारणा में हिन्दी को इस उपन्यास के माध्यम से एक नया मोड़ दिया है। यह एक लघु उपन्यास है जो सन १९६१ई० में प्रकाशित हुआ। अज्ञेय जी ने इस उपन्यास का सृजन विदेशी परिवेश को अपनाते हुए अस्तित्ववादी धरातल पर किया है। इसके सभी पात्र विदेशी है, परन्तु इन पात्रों में हम अपना जीवन चरित्र को भी पाते है। इस उपन्यास में वर्णित घटनाएँ प्रतीक रूप में उभरती है। साथ ही पश्चिमी जीवन हस्तियों को भारतीय युग परिवेश में समझने में मदद करती है। पूर्व तथा पश्चिम की जिन्दगी का विवेचन भी इसमें दिया गया है। जीवन और समाज की समीक्षा करने से पहले उपन्यास के आवरण पृष्ठ पर लिखा है- ''पर अपनी गहराई में उपन्यास पूर्व एवं पश्चिम का भी एक साक्षात्कार है मृत्यु के प्रति जिन विरोधीभावों की टकराहट इनमें है, वास्तव में उनके पीछे पूर्व एवं पश्चिम की जीवन दृष्टियाँ है।'' (१) यह मृत्यु बोध को प्रकट करने वाला उपन्यास है। इसमें लेखक ने मृत्यु से साक्षात्कार करवाने का प्रयास किया है। इसमें मुख्य दो पात्र है-योके और सेल्मा ये दोनों ही परस्पर विरोधी विचारधारा वाले पात्र हैं। एक मरणासन्न है, किन्तु जीवन के प्रति इसकी ललक है, इमरा जीवित रहते हुए भी मृत्यु के भय से त्रस्त है। यही जीवन-मृत्यु का संघर्ष युक्त परिवेश अपने अस्तित्व के लिए खतरनाक हो जाता है, जिसमें मनुष्य भयग्रस्त होकर अपने अस्तित्व से परेशान होता है। ठीक यही परिस्थिति आज पश्चिमी जगत की है। प्रत्येक मानव वहॉ की विभीषिका मयी स्थिति को देखकर, उस भयंकर असह्य घुटन से उब गया है।

अपने अस्तित्व की सुरक्षा में परेशान है। एक तरफ जहाँ यह विदेशी सभ्यता पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करता है तो दूसरी तरफ हम इसमें आज अपना प्रतिबिम्ब भी प्राप्त करते जा रहे हैं। विश्वम्भर मानव का मत है कि ''यूरोप के जीवन पर जहॉ आत्मीयता की भारी कमी है, गहरा व्यंग्य मानते हैं।'' (२) अकेले रहने की भावना तथा संवेदन शून्य की भावना हमारे अन्दर भी गहराती जा रही है। आज हम भारतीय भी अकेलेपन से घिरते जा रहे हैं।

अपने-अपने उपन्यास में अज्ञेय जी ने कृत्रिमता पर प्रकृति की विजय दिखाई है। पश्चिमी जगत के आधुनिक वैज्ञानिक साधन भी प्रकृति प्रदत्त मृत्यु के सम्मुख नगण्य दिखाई पड़ते हैं। उपन्यास में प्रस्तुत मृत्यु-उन्मुख घुटन आज पश्चिम के सामान्य जीवन की घुटन बन गई है। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से पश्चिमी जीवन का स्वाभाविक चित्रण किया है। मनुष्य अन्ततोगत्वा अपने अस्तित्व को समझ लेता है, जोकि चिर सत्य एवं स्थायी है, वह मुत्यु-उन्मुख है इसी मृत्यु बोध को युग सापेक्ष में डॉ० शुक्ल ने केन्द्रित करने की कोशिश की है, ''मनुष्य का अस्तित्व मृत्युन्मुख है। कोई उसे बचा नहीं सकता। इस विकारामयी स्थिति में वह अपनी सत्ता महाशून्य में उछाली हुई पाता है। लेखक ने अपने अपने अजनबी में उसे केन्द्रानुभूति के रूप में चित्रित करने का प्रयत्न किया है।'' (३) लोकेटण सेल्मा बिना कफन की क्रब में कैद है। अकेलापन मिटाने के लिए सेल्मा अपना अतीत जीवन योके के सामने उधाड़ती है। कथावस्तु स्पष्ट करती है कि उपन्यास में यौर्नात्य तथा पाश्चात्य जीवन दृष्टि की पारस्परिक टकरार है। पश्चिम का दबाव अधिक है साहित्य को रूप मूलतः तद्भव और भारतीय ही है। उपन्यास के अन्तिम अंश में पश्चिम की एक मृत्यु को पूर्व का चरित्र जगन्नाथन मानो सार्थकता प्रदान करता है। डॉ० राम गोपाल सिंह चौहान ने इसके बारे में लिखा है- ''सारा उपन्यास मृत्युवाद की फिलास्फी से भरा हुआ है। कलात्मक वर्णन से मृत्यु उदान्तीकरण किया गया है।'' (४) फलतः अपने-अपने अजनबी' पश्चिम जीवन बोध को ही दर्शाने वाला दर्शनशास्त्र है। इसका मुख्य विषय मृत्यु बोध एवं प्रतिपाद्य अस्तित्व वाद है। मृत्यु के प्रति परस्पर विरोधीभाव पूर्व एवं पश्चिम की जीवन दृष्टियों के चित्र प्रस्तुत करते हैं। अज्ञेय का यह एक नव प्रयोग है जो हिन्दी में कालजयी है। डॉ० बेचन पूर्व एवं पश्चिम के प्रति विचारों की तुलना करते हुए कहते हैं- ''मेरी समझ में तो उसमें मृत्यु के प्रति पूर्व की स्वीकार भाव और पश्चिम के विरोध भाव की तुलना भी की गई हैं''। (५) योके तथा सेल्मा की द्वन्द्वात्मक कथा को फ्लैस बैक शैली से प्रस्तुत किया गया है। दोनों पात्र एक दूसरे के लिए अजनबी जीवन का दृष्टिकोण है। अज्ञेय ने स्वयं जीवन का दर्शन प्रकट करते हुए उपन्यास में लिखा है- ''और ठीक यहीं पर फर्क है। वह जानती है और जानकर

करती हुई भी लिए जा रही है। और मैं हूँ कि जीति हुई भी मर रही हूँ और मरना चाह रही हूँ।'' (६) सेल्मा मरती हुई भी जीना चाहती है और योके जीती हुई भी मर रही है। ठीक योके की ही समस्या आज के पश्चिम की समस्या हो गई है।

यह उपन्यास नये प्रयोग को दर्शाता है वहीं यह मनोविश्लेषणात्मक कोटि का उपन्यास है। कथानक नीतिदीर्घ है, किन्तु उसमें मृत्यु से अवगुंठित मानव की सहजानुभूति का चित्रण दो पात्रों के माध्यम से किया गया है। इस चित्रण के लिए यथोचित परिवेश अज्ञेय ने तैयार किया है। अचानक अधिक बर्फ पड़ने के कारण योके और सेल्मा एक बर्फ से आच्छान्दित काठघर में बंद हो जाते हैं। योके आकस्मिक कैद है, किन्तु सेल्मा प्रत्येक वर्ष जाड़े के मौसम में इसी तरह एकाकी जीवन बिताती है। योके और सेल्मा परस्पर अजनबी है। एक जगह पर रहने के कारण परस्पर परिचय मानव-सुलभ गुण है, परन्तु यह परिचय मौत का परिचय है। योके उस परिस्थिति से अपरिचित होने के कारण डर रही है। सेल्मा निर्भय है वह योके को दिलासा देती हुई कहती है-'' खतरे में डर के दो चेहरे होते हैं, जिसमें एक को दुस्साहस कहते हैं, कई लोग इसी एक चेहरे को देखते हुए बड़े-बड़े काम कर बैठते हैं और कहीं के कहीं पहुँच जाते हैं। लेकिन धीरज में डर का एक ही चेहरा होता है, और उसे देखे बिना काम नहीं चलता। उसे पहचान लेना आधार है तब उतना अकेला नहीं रहता'' (७) फिर भी योके को उस कमरे के वातावरण को देखते हुए मृत्यु का आभास होता है और कब्र का अनुभव करती है- ''हमेशा सुनती भाई हूँ कि कब्र में बड़ा अन्धेरा होता है, लेकिन यहॉ उसकी भी असम्पूर्णता और विविधता है। शायद यही वास्तव में मृत्यु होती है।''[८]

योके तथा मेल्मा मृत्यु से घिरे हुए हैं। सेल्मा मरणासन्न है और योके उसे मरती हुई साक्षात देख रही है, यही कथानक का आधार है। कथानक में मुख्यतः तीन मोड़ आये हैं। एक कथा जो योके और सेल्मा की काठ के घर में बंद, उनका मनोविश्लेषणात्मक चित्रण करती है। दूसरी कथा सेल्मा के जीवन की भूतपूर्व झाँकी है जो अपनी स्मृति के आधार पर योके को सुनाती है। वह भी इसी मृत्यु वृन्त एवं अजनवीपन पर आधारित है। उस समय भी सेल्मा को इसी प्रकार मृत्यु वृत्त एवं अजनबीपन पर आधारित है। उस समभी सेल्मा को इसी प्रकार मृत्यु के संघर्ष का सामना करना पड़ा था। आकस्मिक भयंकर बाढ़ के प्रकोप से पुल के दोनों क्षोर टूट गए, जिसमें कस्बे का सम्बन्ध भी टूट गया। पुल पर केवल तीन दुकानें रह गई, जिसमें एक सेल्मा की चाय और गोस्त की दुकान थी। दूसरा फोटोग्राफर और तीसरा खिलौने की दुकान वाला यान थेफोलेफ बच गया। प्रलयकारी बाढ़ ने मृत्यु का दृश्य उपस्थित कर

दिया था। फोटोग्राफर अपने आपकों खतरे में समझकर नदी में कूद जाता है। बाढ़ की अधिक दिनों तक रूकने की सम्भावना देखकर वहां बचे हुए लोग भी मृत्यु का अनुभव कर रहे हैं। यान तथा सेल्मा भी परस्पर अजनबी हैं किन्तु अपना अस्तित्व खतरे में देखकर परस्पर मिल जाते हे। सेल्मा यान को सबकुछ सौंप देती है। संयोगवश एक नौका आकर उन लोगों के जीवन का उद्धार करती है। यान और सेल्मा दाम्पत्य सम्बन्ध स्थापित करते हैं। तीन सन्तानें होती है। यही जीवन उसके कुछ दिनों तक चलता रहता है। यहीं अपनी कहानी सेल्मा योके को सुनाती है। जो कथानक का द्वितीय खण्ड है। हरसाल आंटी सेल्मा जाड़े में वहीं रहती हैं और उसकी सन्तानें नीचे चली जाती है। कथानक का तीसरा भाग योके के जीवन से सम्बन्धित है। कब्र जैसी कोठरी में सेल्मा की मौत होती है, तत्पश्चात योके के बाहर निकलने पर निर्जन स्थान पाकर जर्मन सैनिकों द्वारा वह वेश्या बना ली जाती है। इस अवस्था को देखकर उसका प्रेमी पाल उसे अस्वीकार कर देता हे। इस समय योके को मृत्यु के सिवा कुछ दिखाई नहीं पड़ता। वह दुर्गन्धमय जीवन से उबकर मृत्यु का वरण करती हैं, उसके लिए भी अच्छे आदमी का सहयोग चाहती है। अन्त में जगन्नाथन के सामने जहर खाकर योके अपना जीवन खत्म कर लेती है।

उपन्यास का कथानक लघु होते हुए भी घटनाओं से परिपूर्ण है। पाठक घटनाओं में इस प्रकार उलझ जाता है कि उपन्यास की लघुता का उसे ध्यान ही नहीं रहता। इसका कथानक दुख से परिपूर्ण है। कथानक के तीनों भागों में मृत्यु से साक्षात्कार का दृश्य ही उपस्थित किया गया है। इस रचना में जो भी मुख्य पात्र दर्शाए गये हैं प्रायः उन सबकी मौते हो जाती है। यान सेल्मा, फोटोग्राफर और योके आदि सभी विवशता या स्वेच्छा से मौत को गले लगा लेते हैं। यह एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। सामान्य जीवन वैज्ञानिक प्रयोग से त्रस्त होकर भौतिक जीवन समाप्त करना चाहता है। योके और सेल्मा आदि पात्रों की मृत्यु करके दुखान्त कथानक बनाकर इसमें पश्चिमी सभ्यता का बड़ा मार्मिक उदारण प्रस्तुत किया गया है। ''उपन्यास के लगभग सभी पात्र मृत्यु का आंलिगन करते हैं। अतः उपन्यास का अंत पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार दुखान्त बना है।'' (९) इस उपन्यास में अज्ञेय जी ने कथानक पर विशेष बल न देकर पात्रों के मनोश्लेषण को ही मुखर किया है। मुख्य कथानक १५ दिसम्बर से सात जनवरी तक है उसके बाद सेल्मा की स्मृति शेष है जो जबानी सुना देती है। योके के बाद की घटना भी बहुत कम समय में घटित हो जाती है। कुछ आलोचकों ने इसे मंद गति का उपन्यास भी स्वीकार किया है-''मंदगति उपन्यासों की श्रेणी में सुनीता, मुक्ति पथ ओर अपने-अपने अजनबी को रख सकते हैं। इसमें जितनी घटनाएँ हैं, सब एकमुखी हैं, एक ही भाव तत्व को क्रमशः विकसित करके चरम तक पहुँचाने वाली है।''(१०)

मौत का सन्नाटा बर्फ के साथ युवती योके और वृद्धा सेल्मा के चारों ओर मंडरा रहा है। दोनों के बीच फैला हुआ अकेलापन और वैचारिक अन्तर अजनबीपन की सृष्टि करता है। सेल्मा कहती है, ''मैं तो अजनबी डर की बात कह गई- अभी तो हम तुम भी अजनबी से हैं। पहले हम लोग तो पूरी पहचान कर लें।'' (११) सम्बन्धों का अजनबीपन योके तथा सेल्मा के बीच एक अलगाव के साथ छितराया हुआ है। सेल्मा उसके लिए अजनबी है, उसमें कुछ ऐसा है जिसको उसने जाना नहीं है। कभी उसके भीतर अपरिचय का भाव इतना घना हो जाता है कि एकाएक उसे अपने आपसे डर लगने लगता है। उसके मन में रहरह कर मृत्युबोध गहराने लगता है जबकि सेल्मा कैंसर ग्रस्त होने के बावजूद मृत्युबोध को परे ढकेलने के लिए बड़े उत्साह में क्रिसमिस मनाती हे। क्रिसमिस की खुशी की नाजुकता का बोध दोनों को है। दोनों में से कोई भी इस खुशी के हल्के क्षण को क्षत-विशत नहीं करना चाहती। परन्तु फिर भी दोनों के बीच एक बेझिल मौन पसरने लगता है। सेल्मा कहती है ''कुछ भी किसी के बस का नहीं है योके। एक ही बात हमारे बस की है-इस बात को पहचान लेना'' (१२) देव शिशु के आसन्न अवतरण की जगह मृत्यु का सन्नाटा उनके बीच फैल रहा है। वृद्धा सेल्मा के विरूद्ध योके के मन में उसकी प्रसन्नता, उत्साह व सक्रियता से घृणा का भाव और प्रबल होता जाता है। यह अपने को जितना रोकती है उतने ही हिंसक रूप में यह घृणा प्रकट होती है। परिस्थितियों के दबाव से उत्पन्न विवशता उसे अपने प्रति भी असहजशील बनाती है। सेल्मा का उल्लास उसे भीतर तक बीच देता है और वह उसके लिए अजनबी हो जाती है। इस विषय में डॉ० गोपाल राय लिखते है-''वे साथ रहकर, खा-पीकर, बातें करके भी एक-दूसरे के लिए अजनबी बनी रहती हैं। जीवन और मृत्यु के प्रति दोनों के दृष्टिकोणों में इतना अंतर है कि उनके बीच कोई रागात्मक सम्बन्ध नहीं बन पाता।' (१३) सेल्मा योके से कहती है- ''और स्वतंत्रता कौन स्वतंत्र है? कौन चुन सकता है कि वह कैसे रहेगा या नहीं रहेगा? मैं क्या स्वतंत्र हूँ कि बिमार न रहूँ कि अब बीमार हूँ तो क्या इतनी भी स्वतंत्र हूँ कि मर जाऊँ? मैंने चाहा था कि अंतिम दिनों में कोई भी मेरे पास न हो। लेकिन वह भी क्या मैं चुन सकी? तुम क्या समझती हो कि इसमें मुझे तकलीफ नहीं होती कि जो मैं अपनों को भी नहीं दिखाना चाहती थी उसे देखने के लिए भगवान ने-एक अजनबी भेज दिया।(१४)

अस्तित्ववादी शैली में इस विवशता के साक्षात्कार के साथ अजनबीपन की भूमिका बचने लगती हे। क्षणभर के लिए यदि दोनों के बीच नैकश्य किसी कारणवश उत्पन्न होता है तो वह तुरन्त लुप्त हो जाता हैं एक दिन आविष्ट होकर स्व चलित गति से योके के हाथ बुढ़िया की गर्दन के आगे

अथमंडलाकार घेर लेते हैं। पर जब बुढ़िया जग जाने के कारण कहती है लेकिन तुम क्यों रूक गई? तो वह सहसा चीख पड़ती है। बुढ़िया इसके लिए अपने को दोषी ठहराती है लेकिन मैंने ही तुम्हें ऐसे संकट में डाला कि तुम्हें अपने भीतर ही दो हो जाना पड़े।' (१५) इसी क्रम में वह अस्तित्ववादी भाषा में कहती है- तुम जो अपने को स्वतंत्र मानती हो, वही सब कठिनाइयों की जड़ है। न तो हम अकेले है, न हम स्वतंत्र है बल्कि अकेले नहीं हैं और हो नहीं सकते, इसलिए स्वतंत्र नहीं है और इसीलिए चुनने या फैसला करने का अधिकार हमारा नहीं है। मैंने तुम्हें बताया है कि मैं चाहती थी कि मैं अकेली मरू, लेकिन क्या यह निश्चय करना मेरे बस का था? (१६)

यहाँ यह भी महत्वपूर्ण बात है कि उस उपन्यास के पीछे अज्ञेय जी का क्या उद्देश्य है? कोई भी रचना सोददेश्य सृजित की जाती है, उसमें ही कृति एवं कृतिकार की सफलता निहित होती है। लेखक ने इस लघु उपन्यास के माध्यम से पूर्व एवं पश्चिम की जीवन दृष्टियों को समझने का प्रयास किया है। कथा का मुख्य प्रतिपाद्य मृत्यु की अनुभूति है। जैसा कि उपन्यास के आवरण पृष्ठ पर उल्लेखित है। पूर्व एवं पश्चिम की जीवन दृष्टियों के साथ ही मृत्यु को वातावरण उपस्थित होने पर मानव के मन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने का सफल प्रयास अज्ञेय जी ने किया है। एक बात और स्पष्ट की गई है कि व्यक्ति कहीं भी रहे उसे साथी की आवश्यकता रहती है, वह साथी चाहे अजनबी ही क्यों न हो। यह मानव का सहजात गुण है। लेखक ने जहाँ भी मृत्यु का दृश्य उपस्थित किया है, वहाँ किसी न किसी को अवश्य प्रकट कर दिया है। सेल्मा की मृत्यु के समय योके उसकी मृत्यु का साक्षात्कार करती है। स्वयं योके जगन्नाथन की गोद में अपने प्राण त्यागती है। पुल की घटना के समय भी यान ओर सेल्मा का साथ रहता है। मानव जीवन का अस्तित्व दूसरों के सहयोग पर आधारित है, जिसके लिए जीवन का बलिदान भी करना पड़ता है। लेखक ने एक जगह लिखा है-''जीवन सर्वदा ही वह अन्तिम कलेवा है, जो जीवन देकर खरीदा गया है और जीवन जलाकर पकाया गया है जिसका साझा करना ही होगा, क्योंकि वह अकेले गले से उतारा नहीं जा सकता- अकेले भोगे वह भुगता नहीं,''(१७) जीवन और मृत्यु का संघर्ष सदैव रहा है चाहे पूर्व हो या पश्चिम इस संघर्ष में मनुष्य का रूप ही बदल जाता है। इन्हीं मानव जीवन के दोनों पहलुओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन ही लेखक का अभिष्ट है। ''मूलतः अज्ञेय ने अपनी इस रचना में मानव जीवन के दो शाश्वत मूल्यों- जीवन और मृत्यु को कथानक रूप प्रदान किया है तथा जिन्हें उन्होंने उपयुक्त पात्रों के माध्यम से पूर्णतः मनोवैज्ञानिक रूप में अभिव्यक्त किया है।'' (१८) मानव का वास्तविक स्वरूप विपत्तिकाल में ही दृष्टिगोचर होता है। अन्य समयों में उनका कृत्रिम रूप ही प्रकट

होता है। मृत्यु मनुष्य की विपत्ति की पराकाष्ठा होती है, उसी समय मानव की मनः स्थिति एवं विचारों की परिगति ज्ञात हो सकती है। उसके भावों में परिचित एवं अजनबीपन का परिवर्तन दिखाई पड़ने लगता है, उसके चरित्र की अनुभूति भी हो जाती है। उपन्यास के आवरण पृष्ठ पर व्यक्त किया गया है-''मृत्यु को सामने पाकर कैसे प्रियजन भी अजनबी हो जाते है और अजनबी एक-एक पहचानते हुए, कैसे इस चरम स्थिति में मानव का चरित्र उभर कर आता है- उसका प्रत्यक्ष अदम्य साहस और इसका विमल लौकिक प्रेम भी वैसे ही और उतने ही अप्रत्याशित ढंग से क्रियाशील हो उठते हैं। जैसे उनकी निम्नतर प्रवृत्तियाँ। (१६) प्रस्तुत उपन्यास में योके और सेल्मा के माध्यम से जीवन-मृत्यु के संघर्ष में उनके साहसिक मनोभावों का लेखक ने कुशल चिश्रण किया है।

मृत्यु बोध को दर्शाने वाले इस उपन्यास को पढ़कर पाठक स्वयं मृत्यु बोध का अहसास करने लगता है। अकेलेपन, एक रूपता और अजनबीपन के बोध को तोड़ने के लिए सेल्मा अपना अतीत उधेड़ती है। अभूतपूर्व बाढ़, भूकम्प और प्रलंयकारी विनाश के बीच में बेतुका सा पड़ा रह गया या तीन खंभों पर टंगा हुआ पुल के बीच का हिस्सा और उसके ऊपर भी तीन-चार दुकानें और उनमें बसे हुए तीन-चार लोग। प्रलय की विभीषिका से थरथर कांपते तीनों प्राणी विवश भाव से सब कुछ देख रहे थे। परिस्थितियों के दबाव में तीनों प्राणी एक दूसरे के लिए अजनबी हो जाते हैं, उनके बीच केवल अमानवीय वस्तुपरक सम्बन्ध रह जाते हैं। यान फोटोग्राफर और सेल्मा के बीच अलगाव की दीवार खड़ी हो जाती है और अपरिचय घना हो जाता है। सेल्मा की क्रूरता से बीमार फोटोग्राफर के मानस में गहराता अजनबीपन का बोध उसे पागल बना देता है। और वह अपनी दुकान में आग लगाकर आत्महत्या कर बैठता है। सेल्मा और यान अपने बीच पनपे अलगाव को पाटने की असफल कोशिश करते हैं। यान की उदारता से प्रभावित सेल्मा जब अचानक विवाह का प्रस्ताव रखती है तो यान बिफर पड़ता है। सेल्मा के मन में परायेपन की अनुभूति तीखे रूप में कौध जाती है और वह सोचती है कि टूटे अर्धक्षीण पुल की नियति उसकी भी है। बाद में उसके पूर्ण आत्म समर्पण पर यान उसे स्वीकार कर लेता है। सेल्मा अब मौत का ग्राम बन जाती है तथा योके को सर्वत्र फैली हुई मृत्यु-गंध सड़ने और घिनौनेपन की प्रतीति विफल कर देती हैं योके इस मृत्युगंध से विक्षिप्त-सी हो जाती है। ईश्वर के प्रति उसका आक्रोश प्रबल हो जाता है। तथा वह उसको गालियाँ देने लगती है। अज्ञेय ने बड़ी कलात्मकता के साथ विशिष्ट स्थितियों का चयन करके बिना कफन की कब्रगाह के अजनबीपन, मानवीय सम्बन्धों की क्रूरता से पनपे अजनबीपन और भीड़ के भीतर के अजनबीपन को सर्जनात्मक स्तर पर उभारा है-''अजनबी चेहरे,

अजनबी आवाजें, अजनबी मुद्राएं और वह अजनबीपन केवल दूसरे को दूर रखकर उससे बचने का ही नहीं है, बल्कि दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने की असमर्थता का भी है- जातियों और संस्कारों का अजनबीपन, जीवन के मूल्यों का अजनबीपन।"(२०)

इस उपन्यास में आधुनिक समाज की स्वार्थ परता एवं अजनबीपन पर सटीक किया गया है। आधुनिक जगत को दौलत से इतना लगाव हो गया है कि मृत्युभय होने पर भी त्यागने को तैयार नहीं है, इसका उदाहरण सेल्मा का पुल पर का जीवन है। मौत से घिरी सेल्मा पड़ोस के दुकानदार से अजनबी बनकर पानी तथा गोस्ट की दुगुनी कीमत लेती है। यह व्यक्ति की स्वार्थपरता नही ंतो और क्या है? लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में आधुनिक जीवन की अनेक समस्याओं को उठाया है। उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य पूर्व एवं पश्चिम की आधुनिक समाज की जीवन शैली को प्रकट करना है, जिसके लिए मृत्यु बोध एवं मृत्यु के साक्षात्कार जैसे विषय को कथानक रूप प्रदान किया गया है। क्योंकि वास्तविक परिवश का उद्हरण ऐसे ही वातावरण में सम्भव था। यह एक नव प्रयोग हैं आज भी स्वार्थपरता धीरे-धीरे भारतीय परिवेश में घर कर रही है इसमें कोई दो राय नहीं है।

इस उपन्यास में मुख्य रूप से दो ही पात्र है। अन्य पात्र गौण रूप से कथा की पुष्टि करते हैं। केवल एक पात्र को छोड़कर शेष सभी विदेशी पात्रों का समावेश हुआ है। पात्र परस्पर विरोधी विचार वाले हैं। लेखक का ध्यान पात्रों एवं उनके चरित्रों के चित्रण पर उतना नहीं गया है, जितना उनके प्रति पाद्य विषय पर गया है, फिर भी चरित्र अस्पष्ट नहीं रह गया है। योके तथा सेल्मा दो परस्पर विरोधी प्रधान पात्र है। यान फोटोग्राफर, पाल और जगन्नाथन आदि गौण पात्रों में आते हैं इसके सभी पात्र परस्पर अजनबी हैं। उनका व्यवहार भी अजनबी है। कुछ समय परिचय के बाद ही व्यवहार में परिवर्तन आ पाता है। सेल्मा का चरित्र अस्वाभाविक सा लगता है, परन्तु यदि सामाजिक दृष्टि से देखा जाये तो पश्चिमी देशों के पतन का घोतक होता है और योके का चरित्र मानवेतर होते हुए भी पूर्व की सभ्यता, संस्कृति एवं जीवन दर्शन का प्रतीक है। सेल्मा बुजुर्ग है। अचानक उसके साथ योके के बर्फ से घिर जाने पर उसका सामान्य व्यवहार प्रायः अमानवीय श्रेणी में आता है। योके के साथ सेल्मा का अजनबीपन भी उसका समर्थन करता हैं आद्यन्त योके और सेल्मा का साथ अजनबी ही बना रहता है। सेल्मा अकेले रहना चाहती थी, किन्तु विवशता से योके का साथ हो जाता है। यहाँ प्रायः यह भी लेखक ने स्पष्ट किया है कि इन पात्रों को न चाहते हुए भी एक दूसरे के साथ रहना पड़ रहा है।

योके का चरित्र सेल्मा की अपेक्षा अधिक जागृत हे। योके जीना चाहती है किन्तु परिस्थितिवश मृत्यु से आक्रान्त है और प्रत्यक्ष देख रही है। योके सेल्मा का भयानक चेहरा देखता है उससे भयभीत होकर उसका गला घोंटना चाहती है, किन्तु वह उसकी परिस्थिति जन्म विवशता है। उसमें सेल्मा को देखकर जीवन के प्रति निराशा है, जिसका प्रभाव योके को मृत्यु का वरण करने में प्रोत्साहित करता है। योके और सेल्मा के अतिरिक्त अन्य पात्रों का चरित्र अविकसित है वो उनके पूरक हैं। लेखक को उसके उद्देश्य की पूर्ति अपना प्रतीकात्मक चरित्र-चित्रण में भले ही सफलता मिली हो किन्तु व्यक्तिगत रूप से चरित्र-चित्रण नहीं सम्पूर्ण जगत का तुलनात्मक चित्रण है। इसे उपन्यासकार का नवीन चारित्रिक प्रयोग कहा जा सकता है। आज आधुनिक समाज कितना अजनबी बन गया है, ऐसी सभ्यता से लेखक ने परेशान होकर इन चरित्रों के माध्यम से उस पर व्यंग्य किया है।

यह उपन्यास पाश्चात्य जीवन शैली पर आधारित है। एक तरह से लेखक ने पूर्व तथा पश्चिम जीवन शैली का तुलनात्मक अध्ययन हमारे सामने प्रस्तुत किया है। मृत्यु बोध तथा अजनबीपन भाव प्रत्येक मानव का विदूप जीवन सृष्टा हो गया है। वह इससे बाहर निकलने का प्रयास तो करता है परन्तु निकल नहीं पा रहा है। निष्कर्षतः अज्ञेय के विदेश प्रवास की अजनबीपन की संवेदना इस उपन्यास में देखी जा सकती है। पूर्वीय सभ्यता तथा जीवन दृष्टि से पश्चिमी जीवन दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन लेखक ने योके और सेल्मा के मृत्यु बोध के आधार पर किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

अपने-अपने अजनबी-अज्ञेय, आवरण पृष्ठ- भारतीय ज्ञानपीठ काशी, १९६१
माध्यम- अक्टूबर १९६४, पृ०- ९३, अज्ञेय का रचना संसार- डॉ० गंगा प्रसाद
हिन्दी उपन्यास कला- डॉ० राम लखन शुक्ल, पृ०-१५४, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली १९७२
आधुनिक हिन्दी साहित्य-डॉ० राम गोपाल सिंह चौहान, पृ० २४५, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, १९६५
आधुनिक हिन्दी अपन्यास उद्भव और विकास- डॉ० बेचन, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, १९६९, पृ० १४९
अपने-अपने अजनबी- अज्ञेय- पृ० १३८
वहीं पृ० १६
वहीं पृ० १७
हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास- डॉ० धनराज मानधावे- गृन्थ, प्रकाशन, राम, कानपुर, १९७१, पृ० १७९
हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन - डॉ० गणेशन, राजपाल एण्ड संन्स दिल्ली, १९६२, पृ०- १८०
अपने-अपने अजनबी- अज्ञेय- पृ०- १६
वहीं पृ० २९
अज्ञेय और उनके उपन्यास- डॉ० गोपाल राम, नेशनल प० हाउस, दिल्ली, १९६६, पृ० ११३
अपने-अपने अजनबी - अज्ञेय- पृ० ४७
वहीं- पृ० ५९-६०
वहीं- पृ०- ६०
वहीं- पृ० १०१-०२
अज्ञेय का कला साहित्य - डॉ ओम प्रभाकर- पृ०- ४६, रामा प्रकाशन, लखनऊ, १९६५
अपने-अपने अजनबी- अज्ञेय- आवरण पृष्ठ-
वहीं पृ०- ११८